बहुत काम

बरक्त सिंह

बहुत काम
धन का फन्दा

“और यहोशापात ... यहूदा के नगरों में उसका बहुत काम होता था...।” (२ इतिहास १७:१२-१३)

यहूदा के राजा यहोशापात ने अपना राज्यकाल परमेश्वर के भय में अच्छी तरह प्रारम्भ किया। वह एक अच्छा राजा था, जो कि अपने पिता दाऊद की नाई धार्मिकता के मार्गों में चलना चाहता था। वह अपनी व्यक्तिगत भक्ति से ही सन्तुष्ट नहीं था और अपने राज्यकाल के प्रारम्भ के दिनों मे उसने राजकुमारों के साथ लेवियों को यहूदा के सब नगरों में लोगों को नियम एवं परमेश्वर की आज्ञाएं सिखाने भेजा। प्रभु को यह आदर देने के उत्साह के कारण प्रभु ने उसे भरपूर आशीष दी। पलिश्ती उसके पास ईनाम और कर के रुप में चांदी लेकर आए; अरबी लोग मेढ़े और बकरे लेकर आए (पद ७-११)। इस प्रकार परमेश्वर ने अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण की, “जो मेरा आदर करते हैं उनका मैं आदर करूँगा।” (१ शमूएल २:३०)

परमेश्वर के आशीष का एक परिणाम यह हुआ कि यहोशापात भौतिक रुप से बहुत समृद्ध हो गया। परन्तु बाद में यहोशापात का ध्यान देने वाले से हटकर इनाम पर केन्द्रित होने लगा। धीरे-धीरे इन सांसारिक चीजों के प्रति प्रेम ने उसके जीवन में जगह बना ली और उसके प्राण को जकड लिया। यह एक फन्दा है जिससे हमें भी सतर्क रहना चाहिए। संसार की चीजों के प्रति प्रेम चालाकी के साथ हम में प्रवेश कर जायेगा और हम उसके बारे में जान भी न पायेंगे। शत्रु को हमारी कमजोरियाँ मालम हैं, और जब हम अपनी

आशीषों में व्यस्त रहेंगे वह हमारी लापरवाही का लाभ उठा कर हमारे जीवन में प्रवेश कर जायेगा।

बेलारी के पास एक किला बहुत वर्ष पूर्व टीपू सुल्तान के लिए एक फ्रान्सीसी इन्जीनियर के द्वारा बनाया गया था। अभी भी वह अटल और बहुत शानदार मालूम होता है। जब यह किला बन चुका तब वह इन्जीनियर टीपू सुल्तान को घमण्ड के साथ किला दिखाने ले गया था। वे किले के उस स्थान पर पहुँचे जहां से टीपू सुलतान ने किले के निकट ही एक पहाडी देखी। उसने उस इन्जीनियर को डाँटा और कहा, हे मूर्ख इन्जीनियर तुम ने उस पहाडी को किले के बाहर क्यों छोडा? तुमने उसको भी दीवारों के भीतर ले लेना था। अब तो शत्रु उस पहाडी पर चढ सकता है और आसानी से इस किले को जीत सकता है। उस किले को बनाने में बहुत धन और मेहनत लगी थी, परन्तु एक आधारभूत गलती के कारण वह किला किसी काम का न रहा। वह इन्जीनियर अपनी दूरदर्शिता की कमी पर इतना लज्जित हुआ कि उसने आत्म-हत्या कर ली। कुछ ही वर्ष बाद अंग्रेजी सेनाओं ने उसी पहाडी पर चढकर उस किले को जीत लिया। हमारे प्राणों का दुश्मन भी हमारे जीवन में ऐसे ही कमजोर स्थान खोज रहा है, जहां से वह प्रवेश कर सके और हमको नष्ट कर दे।

परमेश्वर ने यहोशापात को आशीष दी थी जिससे उसने बहुत उन्नति कर ली। परन्तु जो प्रभु ने उसे दिया था इतने से सन्तुष्ट होने के बदले तथा अपने राज्य के प्रति कर्तव्यों का पालन करने के बदले वह बहुत से कामों में लग गया ताकि और धनवान हो जाय। स्पष्टरुप से धन के प्रति प्रेम उसकी कमजोरी थी, और उसी कमजोरी के कारण दुश्मन उसके जीवन में प्रवेश कर गया।

आजकल हमें बहुत से प्रचारकों के जीवन में यही कमजोरी – धन के प्रति प्रेम – देखने को मिलती है। जो कुछ प्रभु उन्हें देता है वे उससे सन्तुष्ट नहीं है। परन्तु कुछ और कामों के द्वारा वे अपनी आमदनी बढाना चाहते हैं। कुछ मुर्गी पालते हैं तो कुछ बकरियाँ। कुछ और, नवम्बर और दिसम्बर के महीनों में कैलेण्डर्स बेचते हैं और उससे होने वाले लाभ के स्वप्न देखते रहते हैं। वे कहते तो हैं कि यह हम प्रभु के लिए कर रहें है परन्तु वे अपने दिल में जानते हैं कि वे पैसा कमाने के लिए ऐसा कर रहे हैं। प्रभु के सेवकों में धन के प्रति यह प्रेम देखना कितना दु:खद है। कुछ प्रचारक ऐसे लोगों के यहाँ जाना पसन्द करते हैं, जो समृद्ध होते हैं, और जहां उनकों कुछ ज्यादा प्राप्त होने की आशा रहती है। जब संसारिक लोग योजना बना कर पैसा कमाते हैं तो हमें आश्चर्य नहीं होता, परन्तु जब प्रभु के दास ऐसा करने लगते हैं, तो यह वास्तव में बहुत दु:खद होता है।

लालच के कारण अव्यवस्था

२ इतिहास १७:१४-१९ में हम उन कप्तानों और सैनिकों के बारे में पढते है, जो राजा यहोशापात की सेवा करते थे। वे केवल ताकतवर और साहसी पुरुष ही नही थे, परन्तु वे परमेश्वर से प्रेम करने वाले लोग थे। और उसकी सेवा करना चाहते थे। परमेश्वर का वचन कहता है कि उनमें से कुछ तो परमेश्वर से इतना डरने वाले थे कि उन्होंने स्वेच्छा से परमेश्वर की सेवा के लिए अपने आपको दे दिया था। वे लालची और लोभी नहीं थे। वे आजकल के शासकीय कर्मचारियों जैसे नहीं थे जो अपनी आमदनी से कभी भी सन्तुष्ट नहीं होते और हर वर्ष आन्दोलन करते हैं। ये वे लोग थे जिन्होंने अपनी इच्छा से प्रभु की सेवा के लिए अपने आप को दे दिया था और यहोशापात के पास कोई बहाना नहीं था कि उसे इन सेवकों की और ज्यादा पैसा देने के लिए अधिक धन की

आवश्यकता है। फिर भी हम पढते हैं, कि उसने अपने आपको यहूदा के नगरों में बहुत व्यापार से उलझा लिया था। धन के प्रति प्रेम यहोशापात के दिल में प्रवेश कर चुका था।

पैसे के प्रति प्रेम अनेक प्रचारकों के गिरने का कारण है। वे तर्क करते हैं कि इस बात का दोष उनकी पत्नी अथवा बच्चों को दिया जाना चाहिए, उन्हें नहीं। फिर भी इसकी जिम्मेदारी उन्हीं के कंधों पर हैं।

जब हम २ इतिहास १८ अध्याय पढते हैं, हम यह मान लेते हैं कि यहाँ से यहोशापात के गिरने की कहानी आरम्भ होती है। परन्तु यदि हम ध्यान से देखें तो यह कहानी १७ अध्याय के १३ वें पद से ही शुरु हो जाती है। “यहूदा के नगरों में उसका बहुत काम होता था।” पहली बार पढते समय हम यहोशापात की इस कमजोरी की एक छोटी चीज समझकर ध्यान नहीं देते, परन्तु हमें याद रखना चाहिये कि यह छोटी-सी कमजोरी बहुत बडी गिरावट ले आई। यह सत्य है कि यहोशापात का व्यापार बहुत बढ गया था और वह अधिक समृद्ध, बहुत धनी हो गया, परन्तु शैतान ने उसके अधिक धन के प्रति प्रेम का उपयोग उसे कमजोर करने के लिए किया। इसी तरह शैतान पहले आपके जीवन में प्रवेश करने के लिए थोडी-सी जगह चाहेगा और अन्त में आपको पूरी तरह से पछाड देगा।

हम २ इतिहास १८:१ में पढ़ते हैं कि अहाब के साथ यहोशापात का बहुत लगाव हो गया था। अहाब इस्त्राएल पर राज्य करने वाले सबसे खराब राजाओं में से एक था (१ राजा १६:३०-३३)। ऐसे राजा के साथ यहोशापात ने सन्धि की। जब हम उन्नति करने लगते हैं, धनी हो जाते हैं तो हमें लोभ होता है कि हम धनी और उन्नत लोगों से मित्रता कर लें। हम हर बड़े और धनी व्यक्ति के साथ मित्रता का सम्बन्ध रखना चाहते है। बहुत से लोग चाय पार्टियों में या भोज पार्टियों में जान पसन्द करते हैं, केवल अच्छी चीजें खाने नहीं

परन्तु वहां महत्वपूर्ण लोगों से मिलने की सम्भावना के कारण। इससे उन्हें अजीब तरह की सन्तुष्टि मिलती है। अपने मित्रों से यह कहने को मिलता है कि, मैं फलाने-फलाने (अर्थात किसी खास व्यक्ति) को जानता हूँ; मेरे पास आओ; मैं उनसे बात करके तुम्हारी कमा-धन्धें की समस्या एकदम सुलझा दूंगा।

बडे लोगों के पीछे दौडने की यह इच्छा कभी-कभी परमेश्वर के दासों में भी होती हैं। उनके पास प्रार्थना अथवा वचन के अध्ययन के लिए समय नहीं रहता, क्योंकि वे अपने बच्चों में या फिर दूसरों के बच्चों में, उनको कालेज में भरती करवाने में उलझे रहते हैं। क्रमश: उनकी प्रार्थना का भार कम और कम हो जाता है। वे अधिक से अधिक सांसारिक तरीके अपनाने लगते हैं और संसार के मित्रों के साथ समझौता करने लगते है। वे परमेश्वर पर और उसके वचन पर कम और कम ध्यान देने लगते हैं। बहुत से प्रभु के प्रचारक अपनी सेवा में संसारिक तौर तरीके ले आते हैं।

हम २ राजा ८:१८ में पढते हैं, कि यहोशापात के लडके जेहोराम ने अहाब को लडकी से शादी की। यह एक दम से नहीं हो सकता था। अहाब बहुत ही चालाक आदमी था। वह जानता था यदि वह अचानक से इस शादी का प्रस्ताव रखेगा तो यहोशापात इन्कार कर देगा। क्या यहोशापात परमेश्वर का भय मानने वाला नहीं था? क्या उसने लेवियों और राजकुमारों को अपने राज्य में परमेश्वर के वचन का प्रचार करने और सिखाने नहीं भेजा था? और क्या अहाब का घराना बाल की उपासना करने के लिए और अन्य जाति के पुजारी रानी की मेज पर से खाने पीने के लिए बदनाम नहीं था? अहाब अच्छी तरह जानता था कि यहोशापात के घराने में जो कि ईश्वर से प्रेम रखने वालों का घराना हैं प्रवेश पाना आसान नहीं होगा। इसलिए उसने पहिले यहोशापात से चतुराई के साथ सन्धि कर ली,

जैसा एक राजा दूसरे राजा के साथ करता है। मित्रता करने के पश्चात वह धीरे से शादी का प्रस्ताव ले आया।

हम ठीक-ठीक नहीं जानते अहाब ने क्या तरीका अपनाया। सांसारिक मसीहियों को ईमानदार विश्वासियों तक को धोखा देने के बहुत से तरीके मालूम होते हैं। अहाब की तरह पहले वे इन विश्वासियों से मित्रता कर लेते हैं, और फिर उपयुक्त समय में शादी का प्रस्ताव ले आते है। शायद अहाब ने यहोशापात को समझाया होगा कि क्योंकि वह यहावा का भय मानता है शादी के बाद अपनी बहु के विश्वास को वह बदल सकेगा। किसी तरह यहोशापात राजी हो गया, और उसके पुत्र ने अहाब की लडकी से ब्याह कर लिया। इस ब्याह के बाद कितनी दु:खद गिरावट आई। उसके वचन के लिए यहोशापात ने आरम्भ में परमेश्वर के लिए कितना उत्साह और प्रेम दिखाया था, परन्तु इस विवाह ने उसे एकदम नीचे गिरा दिया।

और अधिक पतन

इस ब्याह के उपरान्त अहाब ने यहोशापात को सामरिया के भोज में आमन्त्रित किया (२ इतिहास १८:२)। अहाब ने कहा होगा, “यहोशापात अब हम अजनबी नहीं है, अब हम केवल मित्र भी नहीं है, अब तो हम रिश्तेदार हैं। इसलिये अब आपको हर हालत में आना और भेंट करनी होगी।” सभ्यता के नाते, यहोशापात को जाना पडा। एक दूसरे के यहाँ इस प्रकार से उनका आना जाना कई बार हुआ होगा। यहोशापात ने भी अहाब को उसकी आवभगत के बदले आमन्त्रित किया होगा।

इस तरह अहाब ने यह मालूम कर लिया कि यहोशापात को किस तरह का भोजन अधिक पसन्द है। एक बार उसने बहुत ही अच्छे बावर्ची को बुलाया और बहुत ही शानदार

दावत यहोशापात के लिए आयोजित की, उसमें बहुत सारे बैल और बकरे मारे गए। भोजन यहोशापात की पसन्द का बनाया गया (२ इतिहास १८:१, २)। इस भोज के बाद अहाब ने यहोशापात को उकसाया कि वह उसके साथ रामोथ गिलाद पर चढाई करे। उसकी चिकनी चुपडी बातों तथा स्वादिष्ट भोजन एवं आवभगत से प्रसन्न होकर यहोशापात ने उत्तर दिया, 'जैसा तू वैसा मैं भी हूँ, और जैसी तेरी प्रजा, वेसी मेरी भी प्रजा है। हम लोग युद्ध में तेरा साथ देंगे।" (२ कुरिन्थियों १८:३)।

ध्यान दीजिए दुश्मन ने कितनी चालाकी से काम किया। अहाब ने एकदम से नहीं कहा, "मेरे महल में जो कि सामरिया में है आओ, "मेरे साथ रामोत गिलाद के युद्ध के लिए चलो।" उसने बड़ी चालाकी से योजना बनाई, यहोशापात पर सामर्थी और चालाक दबाव लाने के लिए। पहले अहाब ने यहोशापात से मित्रता करली; फिर जब तक मित्रता मजबूत न हो गई वह इन्तजार करता रहा, फिर उसने अपनी लड़की की शादी यहोशापात के लड़के से करा दी। फिर यहोशापात के लिए एक बड़ी दावत की और फिर उसे रामोत गिलाद के विरुद्ध लडने के लिए राजी कर लिया। इस समय यहोशापात ऐसे फन्दे में फँस गया कि उसने मीकयाह नबी की चेतावनी पर भी ध्यान नहीं दिया (२ इतिहास १८:१८-२२)।

पहले यहोशापात ने अहाब से कहा, 'में तुझ से प्रार्थना करता हूँ, पहले परमेश्वर के वचन से पूछ ले, आज यहोवा की आज्ञा ले।" उसकी यह आदत थी कि कोई भी महत्वपूर्ण कार्य करने के पहले वह भविष्यद्वक्ताओं से पूछ लिया करता था। अहाब इस बात के लिए भी तैयार था। उसे मालूम था कि यहोशापात परमेश्वर के भविष्यद्वक्ताओं का आदर करता है; इसलिये उसने चार सौ झूठे भविष्यद्वक्ता पूछताछ के लिए तैय्यार रखे थे। इस प्रकार जब यहोशापात ने एक भविष्यद्वक्ता के लिये पूछा तो अहाब चार सौ भविष्यद्वक्ताओं को

ले आया। अहाब यह दिखाना चाहता था कि वह भी ईश्वर का भय मानता है। परन्तु यह बडे दु:ख की बात थी कि पूरे चार सौ भविष्यद्वक्ता आत्मिक रुप से अन्धे थे। उन सब ने अहाब से कहा, "युद्ध करने जा, और तू अवश्य जीतेगा।" "जा प्रभु तेरे साथ है।" उन्हें उनको सुरक्षा की कोई परवाह नहीं थी, उन्होंने मनों से सोचा "यदि ये राजा युद्ध में मर भी जायें तो हमें क्या?"

ऐसे बहुत से उपदेशक हैं जो इन झूठे भविष्यद्वक्ताओं की तरह हैं। वे परमेश्वर के वचन को विश्वासयोग्यता के साथ देने की चिन्ता नहीं करते। वे पता लगा लेते हैं कि लोगों को कैसा वचन अच्छा लगता है और वैसे ही वचन देते हैं। उनकी एक मात्र इच्छा लोकप्रिय होने की होती है। उन्हें अच्छा भोजन और पैसा चाहिए। इसलिये वे लोगों की शारीरिक भूख को तृप्त करते हैं।

परमेश्वर की चेतावनी

फिर भी, यहोशापात प्रार्थना करने वाला व्यक्ति था, और वह समझ गया कि इन चार सौ भविष्यद्वक्ताओं में कुछ गडबडी है। इसी प्रकार से आत्मिक लोग यह जान जाते हैं कि यह प्रचारक परमेश्वर का जन है – नहीं। जब यहोशापात ने उनकी भविष्यद्वाणी सुनी तो उसने अपने आप से कहा; "मैं नहीं सोचता कि ये सच्चे भविष्यद्वक्ता हैं।" इसलिए उसने पूछा, "क्या यहाँ इनके अलावा और कोई भविष्यद्वक्ता नहीं है?" (२ इतिहास १८:६-७)। अहाब ने कहा 'हाँ, एक भविष्यद्वक्ता और है। पर में उसे पसंद नहीं करता, उससे घृणा करता हूँ, क्योंकि वह सदा ऐसी ही बाते करता है जो मुझे अच्छी नहीं लगती।" यहोशापात को खुश करने के लिए अहाब ने न चाहते हुए भी एक हाकिम को भेजकर मीकायाह को बुलवाया। अहाब को मालूम था कि इस बार भी मीकायाह क्या कहेगा।

इसलिए उसने सन्देहवाहक से कहा, "तुम मीकायाह के पास जाओ, और उसके कान में यह कह दो जो चार सौ भविष्यद्वक्ताओं ने कहा है, और उससे कहो की वह भी यही कहे" (२ इतिहास १८:१२)। आजकल भी लेग प्रचारक को वचन देने के पहले अलग बुलाकर कर देते हैं क्या प्रचार करना और क्या न करना। और यदि वह प्रचारक उनकी बात न सुने तो उसकी खैर नहीं। जल्दी हो या देर से आपको भी इस स्थिति से गुजरना पड़ सकता है यदि आप परमेश्वर के सेवक हैं। यदि आप अपने कदमों की निगरानी सतकर्ता पूर्वक नहीं करेंगे तो आप भी गिर पडेंगे। इसीलिये बडी गंभीरता के साथ यह चेतावनी का वचन आपके पास लाया गया है।

मीकायाह परमेश्वर का विश्वासयोग्य सेवक था, और उसने परमेश्वर का सन्देश बहुत ही सच्चाई के साथ दिया (पद १६-२२)। अपना सन्देह स्पष्ट करते हुए उसने यह घोषित कर दिया कि परमेश्वर ने इन चार सौ झूठे भविष्यद्वक्ताओं के मुंह के अन्दर झूठ आत्मा डाल दिया है। उसने स्वयं अपनी सेवा बडी विश्वासयोग्यता के साथ तथा निर्भयता के साथ की। परन्तु अहाब उससे इतना क्रोधित हो गया कि उसने मीकायाह को उसी समय जेल में बन्द कर देने की आज्ञा दे दी (पद २६)।

यहोशापात यह जानता था कि मौकायाह एक सच्चा भविष्यद्वक्ता है। वह अच्छा राजा था तथा अच्छी बातों के प्रति उत्साह भी रखता था। परन्तु दु:ख से कहना पडता है कि वह अहाब के सम्पर्क में आकर बहुत नीचे गिर चुका था। शादी के रिश्ते, दावतों और मित्रता के कारण शैतान ने उसे कमजोर बना दिया था। जब कभी हम कुछ गलती करते है, भले हम उसे ईमानदारी से या न जानते हुए करें, हम आत्मिक रुप से कमजोर हो जाते है।

व्यवस्थाविवरण ७:३ तथा यहोशू (२३:१२), में ईश्वर ने अन्य जातियों के साथ ब्याह के विषय में गंभीर चेतावनियाँ दी हैं। अहाब ने एक अन्य जाति की स्त्री से शादी की

थी, उसका नाम ईज़ेबेल था। वह अपनी मूर्तिपूजा की आदत के कारण बदनाम थी। अब उसका घराना एक अन्य जाति के घराने से किसी भी रुप में अच्छा नहीं था। इसके बाद भी यहोशापात ने अहाब की लडकी से अपने लडके का ब्याह करवाया। उस लडकी का नाम अतालियाह था। इस प्रकार यहोशापात अहाब के फन्दे में फंस गया। और भविष्यद्वक्ता मीकायाह की भविष्यवाणी तथा चेतावनियों के बाद भी वह एक दास की तरह अहाब के साथ युद्ध के मैदान में चला गया।

युद्ध के मैदान में, अहाब ने यहोशापात से कहा कि वह राजा के वस्त्र पहिने, और अहाब स्वयं वस्त्र बदलकर युद्ध करने उतरा (२ इतिहास १८:२९)। अहाब ने सोचा होगा कि इस तरह की चालाकी करने से वह अपने का बचा लेगा। और शत्रु का ध्यान यहोशापात की ओर चला जाएगा। दूसरी ओर यहोशापात इतना मूर्ख हो गया था कि उसने अपना सामान्य ज्ञान तक खो दिया। स्पष्ट रुप से उनका दिमाग काम नहीं कर रहा था। इतना होशियार राजा होने के कारण उसे सोचना चाहिए था, “अहाब क्यों चाहता हैं कि मैं राजकीय वस्त्र पहनूं जब कि वह स्वयं वस्त्र बदलकर लडने जा रहा है?” जब कभी हम प्रभु की आज्ञा नहीं मानते हमारा दिमाग ठीक से काम नहीं करता, और हम मूर्खों जैसा व्यवहार करने लगते हैं, और अपने विनाश की ओर तेजी से बढते हैं।

अहाब के शत्रु ने अपने सैनिकों को आज्ञा दी थी कि वे केवल इस्त्राएल के राजा पर आक्रमण करें। वे किसी सैनिक पर आक्रमण न करें। इसलिये वे लोग राजा की ही तलाश में थे। जब उन्होंने यहोशापात को राजकीय पोशाक में देखा, तो उन्होंने सेना में सबको छोडकर उसे घेर लिया। यहोशापात ने सोचा होगा कि, “जब लोग मुझे मेरी पोशाक में देखेंगे तो समझ जायेंगे कि मैं तो यहूदा का राजा हूँ, और वे मेरे पास नहीं आयेंगे।” परन्तु युद्ध के मैदान में अहाब ने यहोशापात को सामने रखा और शत्रु धोखे में आ गया। उसने

यहोशापात को इस्त्राएल का राजा समझ लिया। इस तरह यहोशापात ऐसी स्थिति में आ गया कि वह किसी भी क्षण मारा जा सकता था। यहाँ हम वह नीचे गिराने वाला मार्ग देखते हैं जिसे यहोशापात ने पकड़ लिया था। वह उसे स्वाभाविक मृत्यु के निकट ले गया। किसी क्षण भी वह मारा जा सकता था।

परमेश्वर क्षमा करने की प्रतीक्षा में

युद्ध के मैदान में संकट की घडी में यहोशापात ने पश्चाताप किया और परमेश्वर ने उसे बचा लिया (पद ३१)। हमारा प्रभु कितना दयालु है। आखिर, यहोशापात परमेश्वर का जन था, यद्यापि वह अहाब और ईज़्रेबल के सम्पर्क में आकर गिर गया था जिसके कारण उसके जीवन में बड़ी हानि और अन्धापन आ गया था। अब जब यहोशापात गिडगिडाता है, प्रभु उसकी सुनकर उसे बचा लेता है। परन्तु इस्त्राएल का राजा अहाब मार डाला गया (पद ३२)। उसका भेष बदलना उसे सुरक्षा नहीं दे सका।

यहोशापात की तरह बहुत से मसीही और प्रभु के सेवक सांसारिक लोगों के साथ समझौता कर बैठते हैं, और इस तरह अपने जीवन में बडी क्षति और हानि ले आते हैं। उनके जीवन में भी ऐसी स्थिति आ जाती है, कि जीवन से शारीरिक अथवा आत्मिक – निराश हो जाते हैं। कई बार वे अन्त समय के लिए ठहरे रहते हैं, कि पश्चाताप करेंगे परंतु तब तक बहुत देर हो चुकी होती है।

२ इतिहास १९:१-८ के अनुसार जब यहोशापात शान्ति के साथ यहूदा लौटकर आया तब उसे जो हानि अहाब की संगति के कारण हुई थी, उसे वह वापस प्राप्त करने का प्रयास करता है। परमेश्वर उस पर अनुग्रहकारी था। वह फिर से उसकी सहायता करने लगा, और उसे उनके दुश्मनों से छुडाने लगा (२ इतिहास २०:२, ३, २२, २५)।

अम्मोनी, मोआबी तथा मूनियों ने मिलकर उसपर आक्रमण किया, तो यहोशापात डर गया तथा उसने उपवास की घोषणा की और परमेश्वर से बिनती की; परमेश्वर ने उसकी प्रार्थन सुनी और दुश्मनों से बिनती की; परमेश्वर ने उसकी प्रार्थना सुनी और दुश्मनों में ऐसी घबराहट डाली कि वे आपस में ही लड़ मरे और सारी सेना युद्ध के मैदान में मर गई। यहोशापात और उसके लोगों को केवल जाकर लूट का माल बटोरना पडा। उन्हें लूट में इतना सामान मिला कि उसे ले जाने में तीन दिन लग गए।

यहोशापात का अन्त

कोई यह सोचेगा कि इतना सब सहने के बाद अब अपने शेष जीवन में यहोशापात विश्वास योग्य रहेगा। परन्तु दु:ख के साथ कहना पडता है, कि इतनी महान विजय जिसका आखिर अनुच्छेद में उल्लेख किया गया है, उसके बाद यहोशापात फिर से अपने ज्ञान पर भरोसा रखने लगा। अब की बार उसने अहाब के पुत्र अहज्जियाह से सन्धि कर ली। क्या यह दु:खद नहीं है कि इतने सारे कटु अनुभवों के बाद भी यहोशापात ऐसी गलती करे? आज भी यहोशापात जैसे बहुत लोग हैं। वे उसी पाप में बार-बार गिर जाते हैं, हर बार वे कहते हैं अब हम ऐसा नहीं करेंगे। उनके लिए जीवन उठने और गिरने का एक बड़ा चक्र है। व बार-बार गलती मानते हैं और फिर गिर जाते है। यहोशापात अहाब के लडके से सन्धि कर लेता है। पूर्व के कडवे अनुभव के बाद भी ऐसा क्यों होता है?

हम २ इतिहास १७:६ में पढ़ते हैं, “उसने यहूदा से ऊँचे स्थान ओर अशेरा नाम मूरतें दूर कर दी।” परन्तु २० अध्याय की ३३ पद में हम देखते हैं, कि ऊँचे स्थान फिर से वापस आ गए। यह संभव है६ कि मूर्तियों का वापस आना यहोशापात के सांसारिक

सम्बन्धों के कारण हुआ हो। अपने राजा को अहाब जैसे मूर्तिपूजक की संगति में देखकर लोगों का हौसला बढा होगा और जब राजा सामरिया गया तब उन्होंने फिर से ऊँचे स्थानों का निर्माण कर लिया।

समस्त एशिया में हम देखते हैं, कि मन्दिर और मस्जिद ऊँचे स्थानों पर बने हुए हैं। यहाँ तक कि रोमन केथोलिक लोग भी अपने मठ, कान्वेन्ट तथा कब्रे ऊॅंचे स्थानों पर स्थापित करते हैं। लोग बडी भीड के साथ वहां तीर्थयात्रा के लिए जाते हैं, और मन्नते मानते हैं। उनका विश्वास हैं, ये मन्नत दु:खों के समय उनकी सहायता करेंगी। उदाहरण के लिए जिनके बच्चें नहीं है, वे सोचते हैं कि ऐसे स्थानों पर जाने और मन्नते मानने से उनकी इच्छा पूरी हो जायेगी।

यद्यपि अपने राज्यकाल के प्रारम्भ में यहोशापात ने ऊँचे स्थानों को हटा दिया था, परन्तु अब वह आत्मिक रुप से इतना निर्बल हो गया था, कि इन ऊँचे स्थानों को बने रहने देता है। इसके कारण उसके जीवन में और अन्धकार आ गया, और उसने अहाब के पुत्र अहज्जियाह से अपनी दोस्ती और पक्की कर ली जिसने यहोशापात पर जोर डाला कि उन दोनों के जहाज एक साथ दूर-दूर के देशों से सोना लाने के लिए भेजे जाएं।

इस प्रकार से हम देखते हैं, कि यहोशापात ने अपना राज्यकाल परमेश्वर के भय में प्रारम्भ किया परन्तु अन्त में वह बिलकुल असफल हो गया यहाँ तक की अपने अच्छे कार्यों को उसने उलट दिया। इस सारी गिरावट का कारण उकसा 'बहुत काम' – अर्थात् उसका धन के प्रति प्रेम जो उसके जीवन में प्रवेश कर गया था, जो धीरे-धीरे उस पर काबू कर लेता है, उसे कमजोर बना देता है और अन्त में उसे गिरा देता हैं।

आइये, हम इससे चेतावनी प्राप्त करे।